शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2024
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के दार्शनिक विचार एवं वर्तमान में इनकी प्रासंगिकता

मीनाक्षी (शोधार्थी)
डॉ. महेश कुमार गंगल (निर्देशक)
सह आचार्य, शिक्षा विभाग
बनस्थली विद्यापीठ,
बनस्थली, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

'मिसाइल मैन' के नाम से विख्यात भारत के महान वैज्ञानिक एवं देश के 11वें राष्ट्रपति डॉक्टर अब्दुल कलाम को वैश्विक मंच पर एक वैज्ञानिक सोच वाले व्यक्तित्व के रूप में जाना जाता है परंतु इस बात का बोध बहुत कम लोगों को है कि अब्दुल कलाम के वैज्ञानिक मस्तिष्क के पीछे आध्यात्मिक विचार भी छिपे हुए हैं। वह एक महान वैज्ञानिक होने के साथ-साथ एक धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। यद्यपि उनकी धार्मिकता में वैज्ञानिकता की झलक देखने को मिलती है। प्रस्तुत शोध पत्र में अब्दुल कलाम के दार्शनिक विचारों का अध्ययन किया गया है। उनके दार्शनिक विचार वर्तमान पीढ़ी के विद्यार्थियों एवं युवाओं को विज्ञान के साथ-साथ धर्म एवं संस्कृति से जोड़ते हुए उन्हे सत्कर्म की ओर ले जाने का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

बीज शब्द- *डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, दार्शनिक विचार, प्रसंगिकता*

प्रस्तावना

डॉ. अवुल पकिर जैनुलअबदीन अब्दुल कलाम को भारतीय मिसाइल प्रौद्योगिकी के जनक के रूप में जाना जाता है। उन्होंने अपने वैज्ञानिक, शोध, शैक्षणिक, प्रशासनिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में जितने भी कार्य किए उन पर अपनी गरिमामयी उपस्थिति की एक अमिट छाप अंकित की। उनका प्रत्येक कार्य उनके अहंकार रहित विनम्र आत्मविश्वास को दर्शाता है। यद्यपि अब्दुल कलाम एक महान वैज्ञानिक, लेखक एवं शिक्षक थे, परंतु उनके जीवन में दार्शनिक विचारों का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनके जीवन में दार्शनिकता का सूत्रपात बाल्यावस्था में पारिवारिक संस्कारों से ही प्रारंभ हो जाता है। अब्दुल कलाम का जन्म 15 अक्टूबर 1921 को रामेश्वरम के एक मध्यमवर्गीय तमिल मुस्लिम परिवार में हुआ था। यहाँ इनका घर रामेश्वरम की मस्जिद वाली गली में बना हुआ था, जो रामेश्वर के प्रसिद्ध शिव मंदिर से कुछ ही दूरी पर स्थित था। इनकी माता आशियम्मा धार्मिक भावनाओं से ओतप्रोत दयालु एवं अति साधारण महिला थी। बचपन से ही छोटी कद काठी एवं शर्मीले स्वभाव के साधारण से दिखने वाले अब्दुल कलाम ने अपने माता-पिता से इमानदारी, आत्मानुशासन, सीमित एवं आवश्यक संसाधनों का उचित उपयोग करना, आडंबर हीन आस्था एवं करुणा जैसे भावों को आत्मसात् कर लिया था। अब्दुल कलाम का एक मुस्लिम परिवार था, परंतु इसके पश्चात भी उनके परिवार के सभी सदस्य हिंदुओं के प्रसिद्ध रामेश्वरम मंदिर के प्रति अटूट आस्था रखते थे तथा वहां पर आने-जाने तथा रहने वाले सभी

हिंदुओं को का पूर्ण सत्कार करते थे। इन सब गुणों के कारण ही अब्दुल कलाम के जीवन में आध्यात्मिक गुणों का विकास प्रारंभ हो गया था।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

वर्तमान शोध अध्ययन का उद्देश्य डॉ. अब्दुल कलाम द्वारा लिखित एवं उन पर आधारित पाठ्य सामग्री का अध्ययन करते हुए उनके दार्शनिक विचारों को उद्धृत करना है। इस लक्ष्य को निम्नलिखित उद्देश्यों के आधार पर प्राप्त करने का प्रयास किया गया है -

- अब्दुल कलाम से संबंधित साहित्य में निहित दार्शनिक विचारों का अध्ययन
- अब्दुल कलाम के दार्शनिक विचारों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का अध्ययन
- अनुसंधान की सीमाएं
- वर्तमान अध्ययन के परिसीमन इस प्रकार हैं-
- वर्तमान अध्ययन अब्दुल कलाम की चयनित पुस्तकों तक सीमित रहा है।
- वर्तमान अध्ययन अब्दुल कलाम से संबंधित शोधकर्ता के लिए उपलब्ध सामग्री तक सीमित रहा है।
- वर्तमान अध्ययन अब्दुल कलाम के केवल दार्शनिक विचारों को ही निर्दिष्ट कर रहा है।

शोध का महत्व

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जब आज का युवा अध्यात्मिक विचारों से निरंतर एक दूरी बनाता जा रहा है तो युवा समाज को आध्यात्मिक विचारों से जोड़ने के लिए इस प्रकार के अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि -

अब तक गुणात्मक शोध अधिकांशतः अब्दुल कलाम के शैक्षिक विचारकों पर किए गये थे, परन्तु यहाँ शोधकर्ता ने दार्शनिक विचारों पर चिंतन का अध्ययन करने का प्रयास किया। अब्दुल कलाम के एक वैज्ञानिक होने के बावजूद इस प्रकार का अध्ययन महत्वपूर्ण है।

- अब्दुल कलाम के दार्शनिक विचारों पर चिंतन का अध्ययन आज की पीढ़ी, समाज और राष्ट्र के लिए अत्यंत उपयोगी होगा। यह शिक्षा से संबंधित प्रत्येक व्यक्ति, शिक्षा के प्रत्येक घटक, विधि, विद्यालय, पाठ्यक्रम, सिद्धांत और मूल्य विवरण के लिए नया दृष्टिकोण प्रदान करेगा।
- वर्तमान अध्ययन के परिणाम शिक्षाविद्, प्राचार्य, शिक्षक, माता-पिता और शिक्षा की प्रगति और विशेष रूप से गुणात्मक शोध करने वाले शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी होंगे।

अनुसंधान क्रियाविधि

अध्ययन ऐतिहासिक रूप से गुणात्मक है। डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम की आत्मकथा का अध्ययन करने के लिए डेटा संग्रह का स्रोत डॉ. अब्दुल कलाम पर आधारित पुस्तकें, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं एवं शोध प्रपत्रों में प्रकाशित लेख तथा उनसे संबंधित वेबसाइट रही है।

डॉ. अवुल पकिर जैनुलअबदीन अब्दुल कलाम के दार्शनिक विचार

दर्शन के व्यापक क्षेत्र को तीन विचारों (मीमांसा) में बाटा गया है-

तत्व मीमांसा

ज्ञान मीमांसा

मूल्य मीमांसा

तत्व मीमांसा का क्षेत्र बड़ा व्यापक है। इसमें सत्ता, सृष्टि, आत्मा-परमात्मा, ईश्वर के स्वरूप की खोज जैसे पहलुओं को शामिल किया जाता है।

ज्ञान मीमांसा का संबंध मानव बुद्धि, ज्ञान, ज्ञान प्राप्त करने के साधन एवं विधियों, ज्ञान की सीमा, प्रमाणिकता, सत्य-असत्य आदि की खोज से होता है।

मूल्य मीमांसा के अंतर्गत जीवन के मूल्यों, आदर्शों और लक्ष्यों पर विचार किया जाता है।अब्दुल कलाम के दार्शनिक विचारधारा में इन तीनों के विचारों का समावेश प्रतीत होता है।

डॉ. अब्दुल कलाम के तत्व मीमांसा संबंधी विचार -

अब्दुल कलाम के तत्व मीमांसक संबंधी विचार निम्नलिखित हैं-

ईश्वर (अल्लाह) संबंधी विचार -

'वह अल्लाह और ईश्वर या खुदा और भगवान के बीच द्वंद्व नहीं है। उसे मंदिर या मस्जिद में तलाशने की जरूरत नहीं है।1

आधुनिक ज्ञान-विज्ञान एवं तकनीक को अपने अंतःकरण तथा मन मस्तिष्क में समाये रखने वाले अब्दुल कलाम ईश्वर अथवा आल्हा में अटूट विश्वास रखते थे। उनका मानना था कि ईश्वर और अल्लाह अलग अलग नहीं है अपितु है, दोनों शक्तियां एक ही हैं। इन्हें भिन्न-भिन्न स्थानों पर तलाश करने तथा इनके विचारों को लेकर आपस में लड़ना व्यर्थ एवं मूर्खतापूर्ण कार्य है। मानव द्वारा इस प्रकार की विचारधारा रखने से ईश्वर अथवा अल्लाह का भी अपमान होता है।

'हम सब ईश्वर की उत्पत्ति हैं।'2

'ईश्वर की सबसे सुंदर कृति मानव जाति है।'3

वह ईश्वर को निराकार, सर्वशक्तिमान एवं एक दिव्य शक्ति के रूपमें स्वीकार करते थे, जो स्वेच्छा से इस संसार को चला रहा है। उनका मानना था कि संपूर्ण प्राणियों की उत्पत्ति ईश्वर की कृपा से हुई है और मनुष्य ईश्वर की सबसे सुंदर रचना है।वह सदैव मनुष्य के साथ रहता है। इसलिए मनुष्य को सदा ईश्वर की अनुभूति को समझते हुए किसी भी परिस्थिति में भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है।

'इस्लाम में ईश्वर पर भरोसा करने के बाद जिस बात की सबसे ज्यादा अहमियत दी गई है, वह है- अपने माता-पिता को चाहना और उनका ध्यान रखना। हजरत मोहम्मद साहब ने कहा है तुम्हारी मां के कदमों में जन्नत है।'4

अब्दुल कलाम माता-पिता को ईश्वर के समान मानते थे। उनका मानना था कि इस सृष्टि में ईश्वर या अल्लाह की इबादत के पश्चात यदि कोई पूजनीय है तो वह माता-पिता हैं। माता-पिता बच्चे को जन्म देकर उसका भरण-पोषण करते हुए उसे समाज में स्वाभिमान के साथ जीवन व्यतीत करना सिखाते हैं। अतः एक मनुष्य के जीवन में उसके माता-पिता का सहयोग सर्वोपरि है। वह स्वयं बचपन से मातृ-पितृ भक्त रहे हैं तथा अपने माता पिता को आदर्श मानते हुए उनके द्वारा दी गई शिक्षा को ही अपनी कामयाबी का आधार मानते थे।

'धर्म को चाहिए कि वह शनैः-शनैः अध्यात्म का रूप लेता चला जाए तथा राष्ट्र के विकास हेतु लोगों को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करे।'5

'धर्म एक मनोहारी उद्यान की तरह है। सुंदरता तथा शांति से परिपूर्ण स्थल मानो कोई सुंदर उपवन कलरव करते सुंदर पक्षियों से परिपूरित हो।6

वह धर्म को आध्यात्मिक विकास, राष्ट्र की उन्नति एवं शांति का आधार मानते थे। उनका मानना था कि किसी भी राष्ट्र के विकास के लिए धार्मिक एकता अत्यंत महत्वपूर्ण होती हैं। वह धर्म एक ऐसे उपवन के समान मानते थे, जिसमें अलग-अलग जाति एवं मान्यताओं के लोग कुछ नियमों का पालन करते हुए सद्भाव के साथ रह सकते हैं। वह प्रत्येक धर्म में वर्णित सत्य अहिंसा, इमानदारी, निष्ठा जैसे गुणों को आत्मसात करने की करने पर बल देते थे। उन्होंने बताया कि सभी धार्मिक ग्रंथों में ज्ञान विज्ञान की अनेक तथ्य वर्णित है इन्हें तथ्यों के सही अर्थों को समझ कर अमल करने से राष्ट्र की उन्नति होती है। इस प्रकार धर्म सदैव राष्ट्र का उन्नती का आधार रहे हैं। वह वर्तमान समाज के धार्मिक विभाजन से बहुत अधिक दुखी थे।

आत्मा संबंधी विचार

डॉ. अवुल पकिर जैनुलअबदीन अब्दुल कलाम आधुनिक संसार के महान वैज्ञानिक होने के बाद भी ईश्वरीय शक्ति के साथ साथ जीवात्मा के अस्तित्व में भी विश्वास रखते थे।

'ईश्वर हमारे अंतःकरण, रूहू या आत्मा के माध्यम से हमारे मन को ज्ञान का प्रकाश प्रदान करता है। वह हमें ऐसी स्पषटता देता है जिससे हम सत्य की अवधारणा को समझने की शक्ति प्राप्त करते हैं।'7

उनका मानना था कि मानव शरीर में ईश्वरीय शक्ति स्वरूप जीवात्मा का वास है। ईश्वर इसी स्वरूप के माध्यम से मानव मन के मस्तिष्क में ज्ञान की ज्योति प्रज्ज्वलित करता है, जिससे मनुष्य को सत्य की अनुभूति होती है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति केलिए अपने अंतःकरण में वास करने वाली आत्मा के स्वरूप को पहचानना आवश्यक है।

अब्दुल कलाम मृत्युको आत्मा परमात्मा के मिलन के रूप में देखते थे।

'ईश्वर किस प्रकार अंधेरा कर देता है। क्या यही उसकी इच्छा थी, लेकिन उसने रास्ता दिखाने के लिए ही सूरज बनाया है। यही है वह जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई है, और आराम के लिए नींद दी है। मृत्यु गहरी निद्रा ही है एक स्वपनरहित नींद, पूरी तरह शांति में.....अल्लाह की नियति के आगे हम कुछ नहीं कर सकते। वही हमारा रखवाला है अल्लाह में अपना भरोसा रखो।'8

उनका मानना था कि मृत्यु ईश्वर की इच्छा से प्राप्त हुई एक गहरी निद्रा के समान है। एक मनुष्य की मृत्यु से परिवार में अंधकार छा जाता है परंतु इसे ईश्वर की इच्छा मानकर स्वीकार करना चाहिए। ईश्वर प्रत्येक मनुष्य का रक्षक है तथा वही इस विकट परिस्थिति से बाहर निकाल सकता है। मृत्यु के विषय में अब्दुल कलाम जलालुद्दीन की मृत्यु पर उनके पिता के द्वारा कहे हुए वाक्यों से प्रेरित होते हैं।

जगत (सृष्टि) संबंधी विचार

अब्दुल क्लाम सृष्टि को ईश्वर की रचना तथा मानव की सर्जनात्मक शक्ति को विकसित एवं प्रदर्शित करने के रंगमंच के रूप में रूप में मानते थे।

'आप मैं और प्रत्येक व्यक्ति को ईश्वर ने यहां अपनी अपनी सृजनात्मक क्षमता से सब कुछ बनने और स्वचेतन के साथ शांति से रहने के लिए भेजा है। हम अपने रास्ते अलग-अलग चुनते हैं और अपनी नियति तय करते हैं।'9

उनका मानना था कि ईश्वर ने संसार में प्रत्येक व्यक्ति को अपनी अपनी सृजनात्मक क्षमता के अनुसार विकास करते हुए विश्व में कुछ नया करने के लिए तथा आपस में शांति के साथ रहने के लिए भेजा है। हम अपनी सर्जनात्मक एवं बौद्धिक क्षमता के अनुसार अपने कार्यों का चयन करते हुए जीवन के पथ पर अग्रसर होते हैं तथा अपना सांसारिक जीवन यापन करते हैं।

अल्लाह ने हर किसी के जीवन की पूरी अवधि उनके हिस्से का सौभाग्य और दुर्भाग्य और उनके प्रयासों का फल पहले ही तय किया हुआ है भविष्य में जो भी कुछ हो सकता है उसकी संभावना की बात करते हुए मुसलमान अक्सर इंशाअल्लाह कहते हैं जिसका अर्थ होता है अल्लाह ने चाहा तो10

सांसारिक जीवन में अग्रसर होते हुए प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में सुख एवं दुख का आना स्वाभाविक है। इसीलिए मनुष्य को भविष्य में सुख की कामना हेतु ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए तथा अपने कार्य में प्रयासरत रहना चाहिए।

प्रार्थना का जो मुख्य काम है...वह है मनुष्य के भीतर नए-नए विचार उत्पन्न करना।...और जब ये विचार उत्सर्जित होते हैं, तो वास्तविकता जन्म लेती है तथा निष्कर्ष सफल घटनाओं के रूप में सामने आते हैं। ईश्वर, हमारे रचीयता, ने हमारे मस्तिष्क के भीतर अपार ऊर्जा एवं योग्यता दी है। प्रार्थना हमें इन शक्तियों को प्रयोग में लाने में मदद करती है।'11

उन्होंने बताया कि ईश्वरीय आराधना बहुत ही प्रबल होती है। प्रार्थना से मनुष्य के मन्मस्तिष्क में नवीन एवं सर्जनशील विचारों की उत्पत्ति होती है तथा उसे मानसिक एवं शारीरिक रूप से ऊर्जा की अनुभूति होती है। इसके परिणाम स्वरूप मनुष्य को वास्तविक जगत में सफलता की प्राप्ति होती है।

डॉ. अब्दुल कलाम के ज्ञान मीमांसा विचार-

अब्दुल कलाम मानव जीवन में ज्ञान को बहुत अधिक महत्वपूर्ण मानते थे।

'जितना ज्यादा अद्यतन ज्ञान आपके पास होगा, आप उतने ही स्वतंत्रत रहेंगे। ज्ञान को किसी के पास से ले जाया नहीं जा सकता, सिवाय इसके कि यह पुराना पड़ जाए।'12

उनका मानना था कि ज्ञान मनुष्य की वास्तविक संपत्ति है। ज्ञान ऐसी वस्तु है जिसे चुराया नहीं जा सकता। इसे दूसरे व्यक्तियों के साथ साझा किया जा सकता है। ज्ञान से मनुष्य में आत्मविश्वास एवं स्वतंत्रतापूर्वक जीवनयापन करने की भावना जागृत होती है। ज्ञान के आधार पर रूढ़ीवादी विचारों को त्याग कर वैज्ञानिक विचारधारा को आत्मसात किया जाता है। ज्ञान ही मनुष्य को आदिमानव से आधुनिक मानव बनाता है।

'मानव ईश्वर का सर्जक है। ईश्वर ने हमें बुद्धि तथा सोचने समझने की शक्ति प्रदान की है। उन्होंने अपने द्वारा सर्जित इस मनुष्य को आदेश दिया है कि वह उस तक पहुंचने के लिए अपनी सोचने समझने की शक्ति का उपयोग पूरे विवेक के साथ करे।...यदि समाज विवेकी है तो विज्ञान हम मनुष्यों के लिए ईश्वर प्रदत्त एक वरदान है।'13

अब्दुल कलाम का मानना था कि मनुष्य की रचना ईश्वरीय शक्ति का परिणाम है। मानवीय बुद्धि एवं सोचने समझने क्षमता उसे अन्य प्राणियों से अलग करती है। मानव अपनी बौद्धिक शक्ति तथा ज्ञान के आधार पर न केवल प्रत्येक समस्या का समाधान कर सकता है, अपितु अपने ज्ञान एवं विवेक के आधार

पर वह आध्यात्मिक शक्तियों पर भी विजय प्राप्त कर सकता है। जिसके फलस्वरूप वह ईश्वर के स्वरूप को समझ सकता है।

वर्तमान युग में भी मनुष्य अपने ज्ञान के आधार पर विकसित की गई वैज्ञानिक शक्तियों का सदुपयोग कर समाज, राष्ट्र एवं विश्व में शांति स्थापित कर सकता है। इसके लिए आवश्यक है कि मनुष्य अपनी बुद्धि में सकारात्मक सोच एवं सत्य को स्थापित करें। सत्य के पथ पर अग्रसर व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र का मार्ग प्रसस्त कर सकता है। 'हमें कदापि नहीं भूलना चाहिए कि हमारी सफलता हमारे सच्चे प्रयासों के साथ दैवीय आशीर्वाद का परिणाम है। कहा भी गया है कि ईश्वर भी कठिन परिश्रमी व्यक्तियों की ही सहायता करता है।'14

उनका मानना था कि हम अपनी बुद्धि एवं ज्ञान के आधार पर सफलताओं को पाने के लिए निरंतर प्रयासरत रहते हैं, परंतु जब हमारे प्रयास में ईमानदारी, निष्ठा, सत्य, दृढ़ संकल्प जैसे गुणों का समावेश होता है तो हमें ईश्वरीय आशीर्वाद की प्राप्ति होती है, जिसके फलस्वरुप हमारे कार्य सफलतापूर्वक संपन्न हो जाते है, क्योंकि ईश्वर भी ऐसे ही व्यक्तियों का साथ देता है जो इमानदारी से मेहनत करते हुए अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होते हैं।

'सच्चा कर्मयोगी यह परवाह नहीं करता कि काम का श्रेय कौन ले जाता है।'15

इस प्रकार ईश्वर को सर्वोपरि मानते हुए जो व्यक्ति ईमानदारी से सफलता को प्राप्त करते हैं, उन्हें सफल कार्य का श्रेय लेने की लालसा भी नहीं होती। वह निष्काम भाव से अपने कार्य में सदैव संलग्न रहते हैं।

डॉ. अवुल पकिर जैनुलअबदीन अब्दुल कलाम के मूल्य (आचार) मीमांसा विचार-

मूल्य (आचार) मीमांसा के अंतर्गत जीवन के मूल्यों, आदर्शों और लक्ष्यों पर विचार किया जाता है। अब्दुल कलाम के विचारों में तर्कशास्त्र एवं नीतिशास्त्र संबंधी विचारधारा स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है।

'अपनी आध्यात्मिक प्रकृति से जुड़ने के लिए यह जरुरी है की जीवन में आपके पास विजन हो।'16

उन्होंने बताया कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में एक लक्ष्य एवं उस लक्ष्य को प्राप्त करने की दृढ़ इच्छा शक्ति का होना आवश्यक है, क्योंकि किसी भी कार्य की सफलता या असफलता संकल्प शक्ति के साथ सत्य एवं नेकी की राह पर दृढ़तापूर्वक कायम रहने पर निर्भर करती है। अतः मनुष्य को मन को पवित्र एवं ईश्वर पर विश्वास रखते हुए निरंतर जीवन लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए।

'हम श्रेष्ठता की होड में रहते हैं। अपनी महानता का दावा करते हैं। इससे स्वयं दुखी होते हैं दूसरों को भी दुखी करते हैं। इस समूचे परिदृश्य में हम यह भूल जाते हैं कि हम वास्तव में बहुत तुच्छ हैं हम छोटी सी आकाशगंगा के निवासी हैं। हमारा सूर्य एक नन्हा सा तारा है। हमारा बसेरा, पृथ्वी तुच्छ ग्रहों में से एक है।'17

उनका मानना था कि व्यक्ति अपनी सफलता का आनंद तभी ले सकता है, जब वह अहंकार एवं प्रतिस्पर्धा को त्याग कर अपना कार्य करता है। जो व्यक्ति दूसरों से प्रतिस्पर्धा करते हुए आगे बढ़ने का प्रयत्न करते हैं, वह स्वयं भी दुखी रहते हैं तथा दूसरे व्यक्तियों के मार्ग में भी बाधा उत्पन्न करते हैं। अतः व्यक्ति को कभी भी अपनी सफलता पर अहंकार नहीं करना चाहिए। वास्तव में मानव बहुत ही

तुच्छ प्राणी है। मनुष्य के अस्तित्व का अनुमान इसी वैज्ञानिक सत्य से लगाया जा सकता है कि वह जिस विशाल पृथ्वी पर रहता है, वह ब्रह्मांड में फैली हुई अनेक विशाल आकाशगंगा में से एक छोटी-सी आकाशगंगा में पाए जाने वाले सौर मंडल का छोटा-सा अंश है। इस प्रकार विशाल ब्रह्मांड के सामने मानव एक तुच्छ एवं अस्तित्व विहीन प्राणी है। इसलिए मनुष्य को कभी भी किसी भी परिस्थिति में अहंकार या स्वयं को महान सिद्ध नहीं करना चाहिए।

कुल मिलाकर जीवन जो है वह अनसुलझी समस्याओं, संदिग्ध विजय, पराजय का मिश्रण है... कठिनाइयों एवं संकटों के माध्यम से ईश्वर हमें बढ़ने का अवसर प्रदान करता है। इसलिए जब आपकी उम्मीदें, सपने और लक्ष्य चूर-चूर हों जाए तो उनके भीतर तलाश कीजिए, आपको उनके भीतर छिपा कोई सुनहरी मौका अवश्य मिलेगा।'18

इस प्रकार अब्दुल कलाम जीवन को एक कभी न समाप्त होने वाली ऐसी यात्रा के रूप में देखते हैं जिसमें समस्याएं एवं हार-जीत का समावेश है। उनका मानना था जीवन में आने वाली समस्याएं नए तरीके से आगे बढ़ने का अवसर प्रदान करती हैं। इसलिए मनुष्य को असफलताओं को लेकर दुखी एवं कुंठित नहीं होना चाहिए, अपितु असफलताओं के भीतर छिपी हुई सफलता के रास्ते को तलाशना चाहिए।

डॉ. अब्दुल कलाम के दार्शनिक विचारों की प्रसंगिकता

वर्तमान समय में लगभग प्रत्येक व्यक्ति जैसे-जैसे सफलता की ऊंचाइयों पर चढ़ता जाता है वैसे-वैसे अनेक कारणों से वह ईश्वर की उपासना तथा आध्यात्मिकता से दूर होता जाता है इस प्रकार आज का युवा एवं विद्यार्थी आधुनिकता की दौड़ में बने रहते हुए अपने सांस्कृतिक विरासत को भूलता जा रहा है। जिसके फलस्वरूप संसाधन होते हुए भी आधुनिक मानव दुखी, चिंतित एवं कुंठित रहता है। ऐसे में महान वैज्ञानिक एवं भारत के सर्वोच्च संवैधानिक पद तक पहुंचने वाले डॉ अवुल पकिर जैनुलअबदीन अब्दुल कलाम के दार्शनिक विचार समाज को एक नई दिशा देने में अत्यंत उपयोगी होते हैं। उनके आध्यात्मिक एवं दार्शनिक विचारों से ईश्वर के स्वरूप, आत्मा परमात्मा संबंध, सत्य, निष्ठा, मानव की सर्जनात्मक क्षमता एवं उसके ज्ञान की क्षमता को समझा जा सकता है।

निष्कर्ष

अब्दुल कलाम स्वतंत्र भारत के एक महान वैज्ञानिक हुए हैं। अपनी वैज्ञानिक सोच एवं तकनीकी ज्ञान के आधार पर भारत को अग्नि जैसे प्रक्षेपास्त्र प्रदान करने के कारण इन्हे मिसाइल मैन के नाम से भी जाना जाता है। बचपन से विज्ञान के भौतिक एवं गणित जैसे विषयों में रुचि रखने वाले अब्दुल कलाम आध्यात्मिक विचारों से भी ओतप्रोत थे। आध्यात्मिकता उन्हें पारिवारिक संस्कारों से प्राप्त हुई थी। ऐसा प्रतीत होता है कि इनकी सफलता में वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान के साथ-साथ इनके आध्यात्मिक विचारों की भी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही है। जहां एक और अब्दुल कलाम विज्ञान के नएनए पहलुओं पर प्रकाश डालते थे, वही उनके साहित्य में परमात्मा के स्वरूप, परमात्मा-आत्मा का संबंध, सत्य, निष्ठा, ईमानदारी, सर्वधर्म सद्भावना जैसे गुणों का भी समावेश मिलता है। वह एक ओर विज्ञान में विश्वास रखते थे तो दूसरी ओर परमात्मा के स्वरूप एवं उसके अस्तित्व को भी स्वीकार करते थे। वह व्यक्ति को सत्य, निष्ठा एवं सादगी के साथ कार्य करने की प्रेरणा देते हैं तथा किसी भी प्रकार के

आडंबर, दिखावे से हटकर निरंतर कार्य करने की भावना को जागृत करते हैं। इस प्रकार इस महान वैज्ञानिक के विचार ईश्वरीय स्वरूप को स्वीकार करते हुए आधुनिक मानव को प्रतिस्पर्धा की दौड़ में कुंठा से बचाते हुए निरंतर सफलता की ऊंचाइयों पर चढ़ने की शिक्षा देते देते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

1 अब्दुल कलाम एपी.जे. (2016), टर्निंग प्वाइंट (अनुवाद अशोक गुप्ता), नई दिल्ली राजपाल एंड संस, पृष्ठ 50

2 वही, पृष्ठ 92

3 अब्दुल कलाम एपी.जे. (2008), तेजस्वी मन - महाशक्ति भारत की नींव, (अनुवाद अरुण तिवारी) नई दिल्ली, प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ 18

4 अब्दुल कलाम एपी.जे. (2014), आपका भविष्य आपके हाथ (अनुवाद ऋषि माथुर एवं रमेश कुमार), नई दिल्ली, राजपाल एंड संस, पृष्ठ 25

5 अब्दुल कलाम एपी.जे. (2006), हम होंगे कामयाब, दिल्ली, प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ 64

6 वही, पृष्ठ 66

7 अब्दुल कलाम एपी.जे. (2014), आपका भविष्य आपके हाथ (अनुवाद ऋषि माथुर एवं रमेश कुमार), नई दिल्ली, राजपाल एंड संस, पृष्ठ 100

8 अब्दुल कलाम एपी.जे. (1999), अग्नि की उड़ान, लेखन सहयोग - अरूण तिवारी, दिल्ली, प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ 43

9 वही, पृष्ठ 189

10 अब्दुल कलाम एपी.जे. (2014), आपका भविष्य आपके हाथ (अनुवाद ऋषि माथुर एवं रमेश कुमार), नई दिल्ली, राजपाल एंड संस, पृष्ठ 167

11 अब्दुल कलाम एपी.जे. (1999), अग्नि की उड़ान, लेखन सहयोग - अरूण तिवारी, दिल्ली, प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ 51

12 वही, पृष्ठ 95

13 अब्दुल कलाम एपी.जे. (2006), हम होंगे कामयाब, दिल्ली, प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ 66

14 अब्दुल कलाम एपी.जे. (2006), हम होंगे कामयाब, दिल्ली, प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ 65

15 अब्दुल कलाम एपी.जे. (1999), अग्नि की उड़ान, लेखन सहयोग - अरूण तिवारी, दिल्ली, प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ 152

16 अब्दुल कलाम एपी.जे. (2014), आपका भविष्य आपके हाथ (अनुवाद ऋषि माथुर एवं रमेश कुमार), नई दिल्ली, राजपाल एंड संस, पृष्ठ 52

17 अब्दुल कलाम एपी.जे. (1999), जीवन वृक्ष (अरूण तिवारी एवं रमेश कुमार), दिल्ली, प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ 72

18 अब्दुल कलाम एपी.जे. (1999), अग्नि की उड़ान, लेखन सहयोग - अरूण तिवारी, दिल्ली, प्रभात प्रकाशन, पृष्ठ 158